www.thearyasamaj.org

Date of Publication: 25 August 2013

कमल ज्योति

(मासिक पत्र)

वर्ष-7, अंक-4 सितम्बर 2013 विक्रमी संवत् 2070 सृष्टि संवत् 1960853113 एक प्रति का मूल्य 10/-रुपये आजीवन शुल्क 1100/-रुपये

ओ३म्

संस्थापक

भजनप्रकाश आर्य

संरक्षक

ओमप्रकाश हसीजा

प्रधान सम्पादक

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री

चलभाष : 9810084806

सम्पादक

एल.आर. आहूजा

आचार्य शिव नारायण शास्त्री

अतुल आर्य

चलभाष : 9718194653

दूरभाष : 011-27017780

सहयोगी सम्पादक

प्रिंसीपल हर्ष आर्या

राजीव आर्य

चलभाष : 9212209044

नरेन्द्र आर्य 'सुमन'

चलभाष : 9213402628

श्री भजन प्रकाश आर्य की पावन स्मृति में

07.09.1936--20.10.2012

कर्म ही पूजा तुम्हारी, कर्म ही अराधना।
लक्ष्य था निश्चित किया, कर्त्तव्य पथ की साधना।
सर्वदा मुख पर तुम्हारे, खेलती मुस्कान थी।
हृदय था सद्‌भाव भूषित क्या निराली शान थी।
करूणा जहाँ ममता जहाँ, जागृत जहाँ सुविवेक था
मन में विराजित धीरता, उत्साह का अतिरेक था
दीनता से दूर कोसो, स्वाभिमान अखण्ड था
संकटो से झूमते, संघर्षभाव प्रचण्ड था
संस्कार आर्य समाज के, शिशुता में थे तुम को मिले।
सत्संग से स्वाध्याय से, वर्दित हुए फूले फले
सद्‌भावना की डोर से सब जन बंधे, उद्‌देश्य था।
प्रेमभाव पले हृदय में, भेदभाव मिटे सभी
यज्ञमय जीवन बने, नैराथ्य आवे ना कभी
अनुभव स्वयं संचित किया, जो कुछ मिला संसार से
जनहित समर्पित कर दिया, स्नेहिल मधुर व्यवहार से
जो दीप कमल ज्योति का, तुमने जलाया था कभी
सुविचार का व्यवहार का, आलोक पाते है सभी
हाँ, तुम्हारी मधुर स्मृतियों पथ हमें दिखलाएंगी,
प्रेरणा बन कर हमारा, हृदय कमल खिलाएंगी।

-ओम प्रकाश ठाकुर

-: विनीत :-

हसीजा परिवार, नन्दवानी परिवार, अरोड़ा परिवार, पाहुजा परिवार, आर्य परिवार
एवं माता कमला आर्य स्मारक ट्रस्ट के सभी सदस्य

www.thearyasamaj.org

गतांक से आगे

सामवेद संहिता

–श्रीमती प्रकाशवती बुग्गा

इन्द्राग्नी युवामिमे३ऽभि स्तोमा अनूषत। पिबतं शम्भुवा सुतम्।।
या वां सन्ति पुरुस्पृहो नियुतो दाशुषे नरा।
इन्द्राग्नी ताभिरा गतम् ।।
ताभिरा गच्छतं नरोपेदं सवनं सुतम्। इन्द्राग्नी सोमपीतये।।761।।

हे इन्द्र अग्नि स्तुति गीत, तेरे लिए हो गए हैं।
तुम दोनों इसे स्वीकार करो, हम शरण तुम्हारी आए हैं।।
तुम दोनों में नेता के गुण, हे इन्द्र अग्नि छाए हैं।
अपने प्यारे भक्तों हित ही, ये गुण गण आए हैं।।
नेताओं हम ने यज्ञ रचाया, परमानन्द पाने के लिए।
उत्तम गुण संग आओ, इसे सफल बनाने के लिए।।

अर्षा सोम द्युमत्तमोऽभि द्रोणानि रोरूवत्। सीदन्योयौ वनेष्वा।।
अप्सा इन्द्राय वायवे वरूणाय मरुभ्दय:। सोमा अर्षन्तु विष्णवे।।
इषं तोकाय नो दधदस्मभ्यं सोम विश्वत:।
आ पवस्व सहत्रिणाम् ।।762।।

हे इन्द्र तू है गूंज करता, मम इन्द्रियों में ही समा।
उत्तम प्रकाश के दाता, मुझ को अपना प्यारा भक्त बना।।
इन्द्र वायु वरूणा मरूत्, शक्तियों का दान दे।
कर्मशील बना हमें, परमानन्द रस का पान दे।।
उन्नतिपथ में चल हमें, सहस्त्रों सुख प्रदान कर।
ज्ञान का भोजन दिला, शक्ति सुख भगवान भर।।

सोम उ ष्वाण: सोतृभिरधि ष्णुभिरवीनाम्।
अश्वयेव हरिता याति धारया मन्द्रया याति धारया।।
अनूपे गोमान् गोभिरक्षा: सोमो दुग्धाभिरक्षा:।
समुद्रं न संवरणान्यग्मन् मन्दी मदाय तोशते।।763।।

हे सोम साधक जन सदा, ज्ञान से तुझ को बुलाते।
तू लाता धारा आनन्द की, जब तेरे है गीत गाते।।
गोपाल दोहकर दूध गोधन, पानी के ढिंग ले जाते।
आनन्द के साधक अंगो में आनन्दकोष से आनन्द पाते।।
तुम जिस को सोम बुलाते, जो भक्ति ज्ञान से आता।
वह भक्तगण पाते हैं, जो सच्चे सुख का दाता।।

यत्सोम चित्रमुक्थ्यं दिव्यं पार्थिवं वसु। तन्न: पुनान आ भर।।
वृषा पुनान आयूंषि स्तनयन्नधि बर्हिषि। हरि: सन्योनिमासद:।।
युवं हि स्थ: स्व:पती इन्द्रश्च सोम गोपती।
ईशानां पिप्यतं धिय: ।।764।।

हे सोम अद्‌भुत दिव्य, पार्थिव धन दान कर।
बहता आ तू इसको लेकर, मेरे घर में धान भर।।
हे बरसनहारे पावन कर दे, मेरा जीवन कर्म कराता जा।
दु:खहारी आकर्षक बन, मन मन्दिर में समाता जा।।

इन्द्रो मदाय वावृधे शवसे वृत्रहा नृभि:।
तमिन्महत्स्वा जिषूतिमभे हवामहे स वाजेषु प्र नोऽविषत्।।
असि हि वीर सेन्योऽसि भूरि परादादि:।।
असि दभ्रस्य चिदवृधो यजमानाय शिक्षसि सुन्वते भूरि से ते वसु।।
यदुदीरत आजयो धृष्णवे धीयते धनम्।
युङ्क्ष्वा मदच्युता हरी कं हन: कं वसौ दधोऽस्माँ
इन्द्र वसौ दध: ।।765।।

विघ्ननाशक इन्द्र बल से, प्राप्त परमानन्द करता।
स्मरण उसको हम करें, जो ज्ञान यज्ञ में कष्ट करता।
शत्रु भावों के नाशकारी, मित्रों सहित तू विजय पाता।
यजमान साधक को देकर धन सद्‌गुणों को बढ़ाता।।
जीवन-राग में भक्त की, जो बाधाएं हर लेता है।
ज्ञान कर्म को वश में करके, सुख सम्पत्ति भर लेता है।।

स्वादोरित्था विषूवतो मधो: पिबन्ति गौर्य:।
या इन्द्रेण सयावरीर्वृष्णा मदन्ति शोभथा वस्वीरनु स्वराज्यम्।।
ता अस्य पृशनायुव: सोमं श्रीणन्ति पृश्नय:।
प्रिया इन्द्रस्य धेनवो वज्रं हिन्वन्ति सायकं वस्वीरनु स्वराज्यम्
ता अस्य नमसा सह: सपर्यन्ति प्रचेतस:
व्रतान्यस्य रुश्चिरे पुरूणि पूर्वचित्तये वस्वीरनु स्वराज्यम् ।।766।।

इन्द्रिया जब तृप्तिकारक, पान परमानन्द करतीं। बली इन्द्र से बल पा, स्वराज्य में सानन्द विचरतीं। इन्द्र की प्यारी इन्द्रियां ज्ञान का जब रस पकाती।
दु:ख विदारक साधनों से, सहज ऐश्वर्य पातीं।।
ज्ञानी संयमी इन्द्रियां, इन्द्र की शक्ति वर्धन करतीं।
विविध कर्मो में बनी सहायक, अनुपम शोभा वरतीं।

असाव्यंशुर्मदायाप्सु दक्षो गिरिष्ठा:। श्येनो न योनिमासदत्।।
शुभ्रमन्धो देववातमप्सु धौतं नृभि: सुतम्।
स्वदन्ति गाव: पयोभि: ।।
आदीमश्वं न हेतारमशूशुभन्नमृताय। मधो रसं सधमादे।।767।।

कर्मशक्ति का देनेवाला, सोम सजीला वाणी में रहता।
मैंने उसको सिद्ध किया, उससे मन में आनन्द बहता।।
कर्मशीलता से धोया, दिव्य प्राणाशक्ति का दाता।
उसका रस इन्द्रियां पीतीं, उत्पादक साधक आनन्द पाता।
अश्व सम क्रियाशील, वह आनन्दरूप मन में धरते।
अमर बनने के लिए, मधुर सोम रस पान करते।।

[क्रमश:]

www.thearyasamaj.org

हिंसक अपने लिए विनाशकारी, दूसरों के लिए कल्याणकारी

यश्चकार न शशाक कर्त्तु शश्रे पादमङ्गुरिम्।
—अथर्व 4.18.6

ऋषिः-**शुक्रः**।। देवता-**अपामार्गो वनस्पतिः**।। छन्दः-**अनुष्टुप्**।।

शब्दार्थ- यः=जो **चकार**=हिंसा करता है, **कर्त्तु न शशाक**= वह कर नहीं सकता, करने में अशक्त रहता है वह **पादं अंगुरिम्**=अपने पैर-अंगुलि को, अपने ही अङ्ग-अवयव को **शश्रे**=तोड़ लेता है, हिंसित करता है। हमारी हिंसा करनेवाला **अस्मभ्यम्**=हमारा तो **भद्रम्**=सदा भला ही **चकार**=करता है, **तु**=किन्तु **सः**=वह **आत्मने**=अपने लिए **तपनम्**=सन्ताप करता है, अपने को तपाता है।

विनय- जब कोई निर्बल, अशक्त पुरुष क्रोध के आवेश में आकर किसी बलवान् की हिंसा करने के लिए झुँझलाकर उठता है तो वह प्रायः अपने ही हाथ-पैरों को तोड़ लिया करता है। वह उस बलवान् का कुछ नहीं बिगाड़ पाता। उतावलेपन का, बिना सोचे-विचारे उत्तेजित होकर कुछ-न-कुछ कर डालने का, यही परिणाम हुआ करता है। वास्तव में सदैव निर्बल पुरुष ही हिंसा करता है और हिंसा द्वारा वह जो कुछ करना चाहता है, उसे करने में अशक्त रहता है, क्योंकि हिंसा द्वारा हम कभी किसी का विनाश नहीं कर सकते, कुछ देर के लिए उसे सता सकते हैं, उसके कार्य को राके भी रख सकते हैं, पर इस सबसे तो वह हिस्यमान पुरुष और भी फूलता-फलता है, बढ़ता है। हिंसा द्वारा सदैव अपनी ही हानि होती है। जरा उच्च दृष्टि से देखें तो यह भी दिखेगा कि किसी अपने मनुष्य भाई की हिंसा करने में हम असल में अपने ही अङ्ग-अवयव को, अपने ही हाथ-पैर को तोड़ते हैं। अपनों की हिंसा करके हम अपने को ही जलाते और अपनी आत्मा को ही कमज़ोर करते हैं। इसलिए ज्ञानी पुरुष अपनी हिंसा करनेवाले पर सदा तरस ही खाते हैं। जब उन्हें कोई लाठी मारता है, तो उन्हें अपने शरीर की कुछ परवाह नहीं होती, किन्तु उन्हें फिक्र यह होती है? वास्तव में हमारी हिंसा से हमारा तो सदा भला ही होता है, इससे हमारी सहनशक्ति बढ़ती है और हमारी तपस्या पूर्ण होती है। दूसरी ओर यदि इससे हमारा शरीर भी छूट जाता है तो हमारा एक पवित्र यज्ञ पूरा हो जाता है और इससे अत्यन्त आत्म-शक्ति बढ़ती है एवं हमारा तो सब प्रकार भला-ही-भला होता है, पर तपना तो उस बेचारे हिंसक को पड़ता है। पहले वह अपनी क्रोधाग्नि में तपता है और पीछे उसे अपने हिंसा पाप के प्रतिफल में आये दुःख की अग्नि में तपना पड़ता है।

दान धर्म

दानशील मनुष्य वही हो सकता है जो करुणावान हो, त्यागी हो, सत्कर्मी हो। दधीचि का दान, कर्ण का दान, राजा हरिश्चन्द्र का दान ऐसे ही दान की श्रेणी में आते हैं। यदि हम ईश्वर प्राप्ति के अभिलाषी हैं तो हमें उसकी संतान की सहायता हर संभव तरीके से करनी चाहिए। ईश्वर हर मानव में मौजूद है। हमारा कर्तव्य है हम उसके बनाए जीव की यथा संभव सहायता करे। दान से बड़ा कोई धर्म नहीं है। दान अनेक प्रकार का हो सकता है। किसी जरूरतमंद की सहायता कर देने से बड़ा कोई पुण्य नहीं है। यही परोपकार हैं।

शास्त्रों में परोपकार का फल अंतःकरण की शुद्धि लिखा है। यह सच ही है, क्योंकि परोपकर-दान हम तभी कर सकते हैं जब हम सब प्राणियों के प्रति आत्मवत् हों। हम यह अहसास करें कि हर जीव एक परमात्मा की संतान होने के नाते एक दूसरे से जुड़ा है अतः दूसरे की पीड़ा जब हम स्वयं में महसूस करेंगे तभी सहायता में आगे बढ़ेंगे। दूसरों की वेदना से व्यथित सहृदयी ही हो सकता है। जो ये कोमल भावनाएं अपने अंदर रखता है वह दैवीय गुणों से संपन्न है और दैवीय गुण जब अंतस में पनपते है तो अंतःकरण स्वयं ही शुद्ध हो जाता है। सत्य है कि यदि हम दूसरे की सहायता करते है तो हमें स्वयं को शांति मिलती हैं। दानशीलता भी सत्य, धर्म हैं रामचरितमानस में तुलसीदास कहते हैं-'परहित सरिस धर्म नहीं भाई। परपीड़ा सम नहिं अधमाई।' अर्थात परहित के समान कोई धर्म नहीं है और दूसरों को कष्ट देने के समान कोई पाप नहीं है। कहते हैं विद्या दान महादान। विद्या का दान यूं ही सर्वोपरि नहीं कहा गया है। यदि हम धन व वस्त्र का दान देंगे तो इससे उतनी खुशी व संतोष नहीं मिलेगा जितना कि विद्या दान से। किसी के मन का अंधकार दूरकर ज्ञान का आलोक देना ब्रह्म दान है। इससे उसका इहलोक संवर सकता है। वह ज्ञान के आलोक में सत्पथ भी दे सकता है और ईश तक पहुंचने का रास्ता भी।

—सरस्वती वर्मा

www.thearyasamaj.org

गतांक से आगे

जीवन-मृत्यु का चिन्तन

-डॉ. महेश विद्यालंकार

प्रभु के सान्निध्य में ही आत्मा को अमृतत्व की प्राप्ति होगी। मनुष्य के पास चाहे कितना भी धन, दौलत, साधन, सुविधाएं तथा सम्पन्नता आ जाये, फिर भी इन्सान अपूर्ण, अशान्त और बेचैन रहेगा। जब तक जीवन प्रभु के साथ नहीं जुड़ता, तब तक पूर्णता प्राप्त नहीं होगी है।

हमारा जीवन धर्ममय हो, हमारा धन धर्मपूर्वक कमाया हो, धर्मपूर्वक सांसारिक इच्छाएँ तथा कामनाएँ पूर्ण हों और धर्म का इच्छाओं पर अंकुश हो, तभी हम सच्चे मानव कहला सकते हैं। जब मानव-जीवन सर्वश्रेष्ठ मिला है, तो हमारे कर्म भी श्रेष्ठ और मानवोचित होने चाहिए:-

जमाने में उसने बड़ी बात कर ली।
जिसने अपने आपसे मुलाकात कर ली।

चाहे व्यक्ति कितना धनवान, बलवान्, साधन-सम्पन्न व ज्ञानी हो जाये, शास्त्र पढ़ ले, प्रवक्ता बन जाये और किताबें भी लिख ले, यदि उसमें जीने की कला, कर्मो की सुगन्ध, आत्मज्ञान तथा परमात्मबोध नहीं है, तो सब कुछ बेकार है। दुनिया में अधिकांश व्यक्ति दिव्य परमात्मा को जाने बिना ही चले जाते हैं। जैसे आए, वैसे ही चले गए। जिसे आत्मबोध नहीं, उसे परमात्मबोध कैसे होगा? जिसने खुद को नहीं जाना, वह खुदा को क्या जानेगा? नित्य लोगों को मरते हुए देखते हैं, फिर भी अज्ञानता के कारण अपने मरने तथा अमर आत्मा की नहीं सोचते हैं। जितने हम परमात्मा से दूर होते जायेंगे, उतने भोगों, रोगों व दु:खों में फँसते जायेंगे। प्रत्येक इन्सान को प्रात: उठकर तीन बातें जरूर सोचनी व दुहरानी चाहिए:-

1. मैं इस दुनिया में किसलिए आया हूँ? जिसलिए आया हूँ, उस दिशा में कुछ कर रहा हूँ या नहीं? नहीं कर रहा हूँ तो करने की इच्छाशक्ति व संकल्प दृढ़ करना चाहिए।

2. आया हूँ तो एक दिन जरूर जाऊंगा। मैं अमर होकर सदा रहने के लिए नहीं आया हूँ।

3. जब जगत् से जाऊँगा, तो क्या साथ ले जाऊँगा? साथ ले जाने के लिए धर्मकर्म, दानपुण्य, सत्कर्म आदि नहीं इकट्ठे किये हैं तो करने की सोच व इच्छा जागृत कर लेनी चाहिए। प्राणी अकेला ही जन्म धारण करता और अकेला ही देह छोड़ता है। किसी को पता नहीं जीव कहाँ से किस योनि से आता है, और किस योनि में जायेगा। अकेला ही अपने किये हुए अच्छे और बुरे कर्मो का फल भोगता है। जन्म, बचपन, शैशव, यौवन, वृद्धावस्था और फिर मृत्यु-यह चक्र निरन्तर चल रहा है। दुनिया के रिश्ते, नाते, सम्बन्ध, भाई-बन्धु सभी मरने के बाद समाप्त हो जाते हैं। एक भी रिश्ता नहीं रह जाता है। केवल प्रभु का रिश्ता सदा बना रहता है। वही सच्चा और स्थायी है। उपनिषद् कहती है-उत्तिष्ठत! जागृत! उठो! जागो! अपने को संभालो। जिस उद्देश्य के लिए यह मूल्यवान् मानवजीवन मिला है, उस दिशा में सोचो, समझो और आगे बढ़ो। निराश-हताश नहीं होना है। जीवन की धारा को बदलना है, संसार की बातों से अपने को हटाना और प्रभु की ओर लगाना है। तभी जीवन उद्देश्यपूर्ण होगा।

सुखी जीवन

भारतीय जीवनदर्शन नीरोगता, सुख, शान्ति, प्रसन्नता और प्रेमपूर्वक जीवन को जीने की शिक्षा देता है। सभी सुख-शान्ति से जीना चाहते हैं, मगर जीने की कला से अनभिज्ञ हैं। जीना एक कला है। सभी को जीना नहीं आता। भारतीय संस्कृति में जीवन को जन्म से लेकर मृत्यु तक बड़ा व्यवस्थित व उद्देश्यपूर्ण रूप प्रदान किया गया है। ईशोपनिषद का अमर सन्देश है-**मनुष्य को श्रेष्ठकर्म करते हुए सौ साल तक जीने की कामना करनी चाहिए।** नीरोग, उद्देश्यपूर्ण, सार्थक, योजनापूर्ण ढंग से पूर्ण आयु भोगकर जाने का संकल्प मन में रखना चाहिए। मानवजन्म बार-बार नहीं मिलता है। जो अवसर मिला है, इसको व्यवस्थित, समझदारी, आकर्षण व सुन्दरता से जीना चाहिए, जिसको इतिहास याद करे और सब लोगों के लिए उदाहरण बनें।

यदि मनुष्य को जीना आता है, तो यह जीवन जगत्, घर, परिवार और शरीर-सब स्वर्ग हैं। सुखी जीवन जीने के लिए श्रेष्ठ विचारों की जरूरत होती है। विचारों से ही व्यक्ति जीवन और जगत् को नरक और स्वर्ग बनाता है। अच्छे विचारों से आदमी देवता तथा बुरे विचारों से राक्षस बन जाता है। यह इन्सान के ऊपर निर्भर करता है कि वह जीवन एवं जगत् को नरक बनाकर जीता है या स्वर्ग बनाकर। परमात्मा ने सृष्टि में कोई वस्तु दु:ख के लिए नहीं बनाई है। हम दु:खी तब होते हैं, जब हमें वस्तुओं का उपयोग व उपभोग करना नहीं आता। अधिकांश व्यक्ति दु:ख, कलह, संघर्ष एवं अशान्ति में जीवन व्यतीत करते हैं, जबकि जीवन परमात्मा का अद्भुत वरदान है। आम आदमी से पूछो-क्या हाल है? तो ज्यादतर लोगों से यही उत्तर मिलता है-कट रही या चल रही है, जी रहे या वक्त पूरा कर रहे हैं। यह अमूल्य, दुर्लभ जीवन काटने, चलाने तथा वक्त पूरा करने के लिए नहीं मिला है। वेद कहता है- हँसते-गाते, मौज मनाते, प्रसन्नता, नीरोगता, उमंग एवं सुख-शान्ति से जीवन

www.thearyasamaj.org

को उद्देश्यपूर्ण करते हुए जियो। सांसारिक सुख-भोगों का केन्द्र घर माना गया है। घर हमें शरण, सुरक्षा और सुविधा देता है। घर सुख-शान्ति और अपनत्व का केन्द्र होता है। सच्चा सुख, प्रसन्ता व शान्ति घर में ही मिलते हैं। यदि घर में शान्ति नहीं है, तो बाहर कदापि न मिल सकेगी। जिन्हें घर में सुख-शान्ति तथा चैन नहीं मिलता है, वे बाहर होटलों, क्लबों व बाजार में भटकते हैं। हमारी संस्कृति होम-संस्कृति (गृह-संस्कृति) है, होटल-संस्कृति नहीं। होम तथा होटल में मूल अन्तर नारी का है। घर का मूलाधार नारी होती है। घर नारी से बनता तथा उजड़ता है। नारी घर को तोड़ती और जोड़ती है। स्त्री से दुनियावी रिश्ते-नाते बढ़ते, चलते एवं सिकुड़ते हैं। चाहे नारी घर को स्वर्ग बना दे या चाहे नरक, घर को मन्दिर बना दे या फिर सिनेमाघर, बच्चों को संस्कारी बनाए या आवारा। सुखी जीवन में नारी का महत्वपूर्ण स्थान है। नारी घर की शोभा और लक्ष्मी होती है। भारतीय जीवनपद्धति में नारी की अनन्त महिमा है।

मकान ईटों से और घर विचारों से बनते हैं। मनु ने 'धन्यो गृहाश्रम:' कहकर गृहस्थ को ज्येष्ठ व श्रेष्ठ बताया है। अधिकांश ऋषि-मुनियों और सन्तों ने गृहस्थधर्म का पालन किया है। गृहस्थ में इहलोक तथा परलोक का सुख मिलता है। गृहस्थ में सांसारिक भोगों को मर्यादित और संयमित भोगने का विधान है। गृहस्थ वासना-शमन का श्रेष्ठतम मार्ग है। गृहस्थ से मनुष्य के जीवन में पूर्णता आती है। गृहस्थ मध्यमार्ग का श्रेष्ठ रास्ता है। आश्रम-व्यवस्था हमारी संस्कृति की महत्वपूर्ण विशेषता है। पति-पत्नी गृहस्थ का आधार है। दोनों के गुण-कर्म-स्वभाव और विचारों की अनुकूलता सफल एवं सुखी गृहस्थ-जीवन का आधार हैं। दोनों के गुण-कर्म-स्वभाव और विचारों की अनुकूलता सफल एवं सुखी गृहस्थ-जीवन का आधार हैं। जहाँ आपसी समन्वय, समरसता, तालमेल, एक-दूसरे पर विश्वास है, वहीं स्वर्ग है। जहाँ एक-दूसरे के लिए त्याग, प्रेम, सेवा, सहयोग आदि नहीं होते हैं, वह घर नरक बन जाता है। पति-पत्नी में आपसी कलह दुनिया का सबसे बड़ा दु:ख व क्लेश माना गया है। जहाँ पति-पत्नी कलह, टकराव, विवाद एवं झगड़ों में रहते हैं, वहा सन्तानों पर उसका बुरा प्रभाव पड़ता है। वे बिगड़ जाती है। वेद कहता है-''घरों में प्रीतिपूर्वक रहते हुए पूर्ण आयु को प्राप्त करो। मिलकर चलो। विवादों से बचों एक-दूसरे का सम्मान करो। भोजन और भजन मिलकर करो।''

पारिवारिक जीवन में जो प्रेम, अपनत्व, एकता, भाईचारा आदि होना चाहिए, आज उसका तेजी से अभाव हो रहा है। परिवार टूट व बिखर रहे हैं। आज हमें घरों में बच्चों और बुजुर्गो को सँभालने की जरूरत है, इसी में घरों का महत्व है। क्योंकि बच्चे तथा बुजुर्ग घर की रोनक व शोभा है। आज सन्तानों को अच्छे विचार, अच्छी संगीत और मानवीय संस्कार नहीं मिल पा रहे हैं। आधुनिक नारी नारीत्व की भूमिका से हट व कट रही है। पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव से सदियों पुराने श्रेष्ठ व उपयोगी संस्कारों, जीवनमूल्यों, नैतिक मर्यादाओं, आदर्शो आदि को हम तेजी से हटा और मिटा रहे हैं। परिणाम सामने है-अधिकांश लोग रोग, शोक, चिन्ता, तनाव, दबाव, कलह, अशान्ति, असन्तोष आदि में जीवन ढो रहे हैं। जब घर टूटता है, तब उलझनें, समस्याएं तथा विकृतियाँ और बढ़ती हैं। तब परिवार और व्यक्तित्व तनाव, दबाव, चिन्ताओं अशान्ति, अशान्त होकर टेंशन आदि मानसिक रोगों से घिर जाते और जीवन बिखरने लगता है।

आज बड़ी तेजी से जीवन के प्रति भौतिकवादी, भोगवादी तथा देहवादी दृष्टिकोण बन रहा है। इसी कारण अधिक से अधिक धन एकत्र करना, उसे भोगपदार्थो पर खर्च करना और उन्हें भोगना आम आदमी का जीवनदर्शन बनता जा रहा है। पैसे की दौड़ और चोट से हम पल-पल अपनों से दूर होते जा रहे हैं। आज का पढ़ा-लिखा वर्ग अलग और अकेला रहना चाहता है, इसीलिए सुख-भोग अकेले भोगने की चाह बढ़ रही है। इससे परिवार-परम्परा टूट रही है। बुजुर्ग अकेले व अलग-थलग पड़ रहे हैं। सांसारिक सुख-भोगों की लालसा तीव्र होने से मनुष्य अशान्त, चिन्तित एवं बेचैन हो रहा है। जितना हम भोगों को भोगते जाते हैं, उतनी ही वासना बढ़ती जाती है। प्रसिद्ध उदाहरण है-जलती हुई आग में जितना घी डालते जायेंगे, आग उतनी अधिक तेज होती जायेगी। हम जितना भोग्य पदार्थो को भोगते जायेंगे, उतनी इच्छा और बढ़ती जायेगी। आज तक कोई व्यक्ति भोगों से तृप्त तथा संतुष्ट नहीं हुआ है। वेद का संदेश है-**'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा:'** इस संसार के भोग्य पदार्थो को नियम, त्याग और ज्ञानपूर्वक भोगो। जो व्यक्ति सांसारिक वस्तुओं का नियम, त्याग एवं ज्ञान से उपभोग व उपयोग करते हैं, वे सुखी रहते हैं। जो लोग नियम, त्याग व ज्ञान को भुलाकर चीजों को पशुवत् भोगते हैं, वे रोग, शोक, चिन्ता व बेचैनी में जीते हैं। जहाँ भोगों की कोई सीमा नहीं होती है, वहाँ रोग अवश्य आयेंगे, कोई रोक नहीं सकता है। भर्तृहरि का प्रसिद्ध कथन है- **'भोगे रोगभयम्।'** जहाँ अज्ञानता से भोगों को भोगा जाता है, वहीं रोग उत्पन्न होंगे। यह प्रकृति का नियम है। जो भोगों की दवाई की तरह भोगते हैं, वे सन्तुष्ट रहते हैं। दवाई न अधिक और न कम खाई जाती है।, जितनी जरूरत होती है, उतनी ही लेते हैं।

(क्रमश:)

प्रवचन एवं शंका समाधान

आर्य समाज संदेश विहार में पूज्य स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक जी के पावन सानिध्य में सांख्य दर्शन पर प्रवचन एवं शंका समाधान दिनांक 12 अगस्त 2013 से 15 अगस्त 2013 तक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर धर्मप्रेमियों ने पहुंचकर लाभ उठाया।

www.thearyasamaj.org

Contd. from Last Issuse

Eradication of Superstitions

GHOSTS

—Madan Raheja

There are three eternal entities, 1-God, 2-Soul and 3-Prakriti (Nature). God and numerous numbers the souls are animate i.e. conscious with knowledge and Prakriti i.e. the material cause of the universe in an inanimate entity-without consciousness or knowledge. God is Unique, Omnipresent, Imniscient and Omnipotent hence, He can create the Universe without any body or form. The souls being infinitesimal unities are in numerous numbers with limited power and limited knowledge. The soul cannot act nor do anything without the physical body. Therefore, so-called imaginary bhoot-pret or Ghost or an evil spirit cannot exist without acquiring physical bodies. So, have faith in God and there is no need to fear from these words.

Superstition#3: Ghosts/evil spirits (Bhoot/ Pret) etc. live in darkness and they work only in pitch darkness!

Comments: It is a well known fact that thieves, dacoits, bandits, vile and mean people prefer to work only under the cover of darkness so that they are not recognised and their escape is easy in case of on emergency. All vicious acts are performed behind the curtain. The group of people or individuals-evils doers, seek the darkness of ignorance of common man for spreading their illusory ideas and coax the innocent simple people to get into trap. These bad characters of the society, even spread rumours through their agents to prove their points of view that is how the fictitious stories of 'Bhoot/Pret must have been started by the anti social/wicked elements of the society to meet their selfish ends.

'Bhoot/Pret are defined as the person who was alive befire & is no more now and whose soul has left the physical (dead) body. This has been explained in mere detailed elsewhere in this book.

Note: One basic point must be understood clearly is that the activities performed secretly against the dictates of your inner soul and you feel some doubt, fear & shame while doing it, come under the category of bad deeds. On the other hand, when the tasks undertaken in the open-without fear, favour & doubt in your mind and you feel happy, enthusiastic and don`t feel ashamed of doing it as well as you have the support of your inner voice for the deeds performed, or the one your are going to perform is known as a good/virtuous deed.

Dear friends! Don`t believe such imaginary, unfounded, unexplained, unproven or unscientific stories. Ponder over them, use your logic and then only come to its conclusion. Another name for darkness is ignorance and ignorant people only talk about darkness. Light is knowledge and knowledgeable learned only discuss how to get enlightened.

"AUM! Asato Ma Sadgamay- " O God! Lead us from Untruth to Truth. Tamaso Maa Jyotirgamaya-Lead us from Darkness to Light. Mrityormaa Amritam Gamaya-Lead us from Mortality to Immortality.

Superstition#4: Wandering souls rest in peace by performing Pooja through Brahmins!

Comments: Generally it is presumed (believed) that the people who had died in accidents, their spirits wander about becuase they do not get the new birth immediately after death. A false notion has been created among the common man that these souls will continue to move aimlessly until and unless a worship ceremony is arranged for attainment of peace and a better abode for them. This misconception needs to be removed by understanding comments.

After death, sould goes out and body remains here. The dead body is called as 'Pret'. After it is consigned to flames, it becomes 'Bhoot' (in Hindi) i.e. the past (so & so was there). The word 'Bhoot' is an indicator of time frame-the past. As soon as the soul leaves the body, comes under the system of the Creature also called 'Kaal'. Wandering about of the spirit is not feasible, as soul cannot do anything dwithout its vehicel- the body. Soul gets the Salvation or the re-birth according to the total sum of accumulated deeds over a number of previous births. God only knows soul`s where about and the life state. Till the soul enters the new body, the spirit remains in an unconscious state.

(To be Continued)

www.thearyasamaj.org

बुढ़ापा अभिशाप नहीं है

-सुशीला गुप्ता

'जवानी रूकती नहीं और बुढ़ापा आकर जाता नहीं' ऐसी कहावत है और सच भी है। बुढ़ापा भी सबको आना है। कुछ दिन पहले एक पत्रिका में निकला था कि बूढ़ों की संख्या बढ़ती जा रही है।

पहले बड़े परिवार होते थे, बूढ़े, जवान, बच्चे सब एक ही छत के नीचे रहते थे, घर का एक मुखिया होता था जो कि सम्भव सबके साथ रखकर घर की बागडोर संभालता था। पर अब जमाना आ गया एकल परिवार का, जिसमें पति-पत्नी और दो बच्चों में सिमटकर रह गया। घर भी उसी तरह के बनने लगे। उसी घर में एक गेस्ट रूम होता है यानि कि अतिथि के लिए उसी में मां-बाप का रहना-सहना होता है। यदि किसी के 2-3 बेटे हों तो बारी-बारी से सबके पास रहकर समय व्यतीत हो जाता है, अन्यथा एक के पास रहकर उन्हें बोझ सा प्रतीत होता है। वृद्ध दम्पत्ति में से कोई अकेला बच जाता है, तब तो बुढ़ापा और भी कठिन हो जाता है। इसलिए वो गिनती में आने लग गये, यह तो जिन्दगी का चक्र है। जन्म-मृत्यु ये तो चलता ही रहेगा। पहले भी बच्चे, जवान, बूढ़े सभी होते थे। हिन्दू समाज में एक धारणा कहिए या अन्धविश्वास है कि मरने के बाद उस व्यक्ति के नाम से खूब खर्च करेंगे, जैसा जिसका सामर्थ्य। हजारों लाखों में खर्च करते हैं, दान-पुण्य करना, चांदी के बर्तन देना, गाय देना, सबसे जरूरी मृत्यु-भोज करना है। चाहे उस बढ़े व्यक्ति को रोटी भी न मिली हो। जिन्होंने कष्ट सहकर अपनी सन्तान को पाला-पोसा, पढ़ाया, फिर शादी की। उस समय उनको भी तो अर्थाभव हुआ होगा, बीमार हुए होंगे तो घर का सामान भी बेचने को तैयार हुए होंगे। तो फिर उन गृहस्थियों का भी तो कर्तव्य बनता है कि हम अपने मां-बाप की सेवा भी बच्चों की तरह करें, ताकि हम कुछ तो उनके ऋणों से उऋण हो सके। किसी कारण वश जैसे जगह का अभाव या कहीं और सर्विस के लिए जाना पड़े, इस स्थिति में नहीं रख पायें। इन्हीं हालात के कारण आज जगह-जगह वृद्धाश्रम का निर्माण हो रहा है ताकि बूढ़ों का बुढ़ापा सुख से बीते। वे अपना जीवन बच्चों को साथ, नहीं तो हम उम्र साथियों के साथ गुजारें। एक दूसरे के सुख-दुख के भागीदार बनें। उन्हें लगे कि यह हमारा अपना आश्रय है। पर बच्चों का कर्तव्य है कि उन्हें निराश न करें। महीने का खर्चा दें, ताकि वे अपना खर्च चला सकें। पीढ़ी का अन्तर होने से विचारों में भिन्नता आ जाती है और टकराव का कारण बन जाता है। बुजुर्गो को चाहिए कि ज्यादा हस्तक्षेप न करें और स्वेच्छा से, खुशी से वानप्रस्थ आश्रम या वृद्धाश्रम में रहें। जैसा कि वेदों में विधान भी है, अपनी सन्तान के सन्तान हो जाने पर व्यक्ति को वानप्रस्थी बनकर रहना चाहिए। घर से ज्यादा समय मिलेगा वहां भगवान की भक्ति करने का, चाहे किसी भी तरह अपने आपको व्यस्त रखने का। बूढ़ों से अनुरोध है कि अपना शेष जीवन सुखमय बितायें सलाह है गृहस्थियों से कि अपने मां-बाप को खर्चा अवश्य दें।

- 194, ई.ए. बरेटी रोड, रांची

थप्पड़

उस बस स्टैंड पर तीन दयालु व्यक्ति और एक कहीं से भी दयालु नहीं लगने वाला व्यक्ति बैठा था। इतने में एक बुढ़िया अपने दोनों बेटों के विक्षिप्त होने के कारण दाने-दाने को मोहताज होने की जानकारी देते हुए रोने लगी। इस पर पहले दयालु ने कहा-तुम लोग भूखे मर रहे हो इसका अर्थ है कि राज्य नीति-निर्देशक तत्वों का पालन नहीं कर रहा है, मैं इस बात को विधानसभा और लोकसभा तक ले जाऊँगा।' दूसरे दयालु ने कहा-'ये तुम्हारे गांव वालों के लिए शर्म की बात है कि उनके होते हुए एक परिवार भूख से मर रहा है।' तीसरे ने कहा-'माई अब रोना-धोना बंद करो। मैं बड़ा ही भावुक किस्म का आदमी हूँ, तुम्हें रोता देखकर मुझे भी रोना आ रहा है। 'चौथा व्यक्ति निस्पृह भावन से उनकी बातें सुनता रहा और फिर उठकर वहां से चला गया। इस पर एक दयालु ने कहा-देखो तो लोग दो शब्द सांत्वना के भी नहीं बोल सकते।

कुछ देर बाद वह व्यक्ति एक थैले में दस किलो चावल लेकर आया और बड़ी ही खामोशी से उसने उस बुढ़िया को थैला सौंप दिया। अचानक तीनों दयालुओं का हाथ अपने-अपने गालों तक पहुँच गया। उन्हें ऐसा लगा, जैसे किसी ने उन्हें झन्नाटेदार थप्पड़ रसीद कर दिया हो।

www.thearyasamaj.org

जुकाम में असरकारक है काली मिर्च

–भाषणा बांसल

मौसम बदलने के साथ ही मनुष्य के शरीर में भी परिवर्तन देखने को मिलते हैं। इनमें से सबसे प्रमुख बीमारी जुकाम है जिसके लक्षण सामान्यत: अधिकतर लोगों में दिखाई पड़ते हैं। अगर घरेलू उपचार के तरीके अपनाएं जाएं तो जुकाम से बचा जा सकता है...

- सूखी खांसी में काली मिर्च तथा मिश्री को मुंह में रखने से लाभ होता है।
- गले में खराश हो तो काली मिर्च चूसें।
- संतरे के रस में सेंधा नमक व काली मिर्च मिलाकर उसका नियमित सेवन करने से आंखों की ज्योति बढ़ती है।
- काला नमक, काली मिर्च व जीरा पीस कर उसे गर्म कर लें। पेट में कीड़े हो तो चूसने से आराम मिलता है।
- मलेरिया होने पर काली मिर्च और कुटकी का चूर्ण बना लें। उसे शहद तथा तुलसी के रस के साथ लेने से लाभ होता है।
- खाने के प्रति अरूचि हो तो काला जीरा, अनारदान, सफेद भुना हुआ जीरा, काली मिर्च, मुनक्का, अमचूर तथा काला नमक (10-10 ग्राम) को पीसकर चूर्ण बनाएँ व इसे शहद के साथ खाएँ।
- पुराने जुकाम में खट्टा दही, गुड़ व काली मिर्च का चूर्ण तीनों के मिश्रण का सेवन करने से लाभ होता है।
- बलगम होने पर 8-10 काली मिर्च पीस लें। इसमें नमक मिलाकर सूंघने से बलगम पानी होकर बह जाता है।
- अदरक का रस, काली मिर्च तथा नींबू का रस, तीनों को मिलकार बच्चों को चटाने से उनकी हिचकी बंद हो जाती है।
- सांस के रोगों में काली मिर्च के अर्क का सेवन लाभप्रद है।
- काली मिर्च, भुना जीरा, हींग, प्याज का रस व सेंधा नमक मिलाकर इसका सेवन करने से हैजा दूर होता है।

सत्य और झूठ का निर्णय

एक बार गुरुनानक देव जी लाहौर से सियालकोट पधारे। नगर के बाहर कब्रिस्तान में एक फकीर सैयद गौस रहा करते थे। एक दिन वह बस्ती के लोगों से किसी कारण नाराज हो गये और वहां रह कर नगर का सत्यानाश करने के लिए कई प्रकार के साधन इत्यादि करने लगे।

गुरु नानक देव जी को इस बात का मालूम हुआ तो वह उस फकीर के पास गये। परन्तु उसने गुरु नानक जी से मिलने से इन्कार कर दिया। फकीर उनकी अवस्था को नहीं जानता था। गुरु नानक देव जी लौट आये। प्रकृति का करना क्या हुआ कि जिस समाधि में फकीर रहते थे वह अचानक फट गई। अब फकीर को चिंता हुई और उसे विचार आया कि अकारण ही गुरुदेव का अपमान करने से ऐसा हुआ है। वह दौड़ा-दौड़ा उनके चरणों में उपस्थित हुआ और क्षमा याचना की। तब गुरु जी ने उससे इस भांति प्रश्न किया-

गुरु जी- सैयद जी! यह तो बताइये कि आप इस समाधि में रहकर क्या करते थे?

सैयद- महाराज, इस नगर में एक सज्जन ने मुझे अपना पुत्र देने को कहा था, परन्तु उसने अपना वचन पूरा नहीं किया। इस नगर के लोग बड़े झूठे हैं। इसलिए मैं इनको सज़ा देना चाहता हूं और इसी बात के लिए चेष्ठा कर रहा हूं।

गुरु जी- अच्छा बैठो, थोड़ी देर में इसका निर्णय करते हैं। फिर मरदाना को दो पैसे देकर कहा कि जाओ और बाजार से झूठ खरीद कर ले आओ। मरदाना चला गया। काफी देर के बाद वापस आया क्योंकि लोग उसकी खरीद पर हंसते थे। कहने लगा कि उनको कोई भी झूठ नहीं बेचता। गुरु जी ने मरदाना को फिर आज्ञा दी कि एक बार फिर जाओ, कहीं न कहीं मिल जायेगा। मरदाना जी फिर निकल पड़े और घूमते हुए भाई पूजा के लड़के के पास पहुंचे। लड़का बड़ा बुद्धिमान था। उसने दोनों पैसे ले लिए। कागज के एक टुकड़े पर लिख दिया, 'मरना सत्य है और जीना झूठ'। वह कागज का टुकड़ा लेकर मरदाना गुरु जी के पास आया और गुरु चरणों में उसे रख दिया। गुरु जी ने वह टुकड़ा सैयद गौस को दिखाते हुए कहा, ''देखो इस नगर में ऐसे-ऐसे लोग भी रहते हैं। फिर आप नगर के सब लोगों को झूठा कैसे कह सकते हैं?''

www.thearyasamaj.org

ओ३म्

कौन सफल है?

–आचार्य ज्ञानेश्वरार्य जी

व्यक्ति को प्राय: यह अनुभव होता है कि मैं उन्नति कर रहा हूं, प्रगति कर रहा हूं, पवित्र होता जा रहा हूं। अत: वास्तविक उन्नति और विकास क्या है, इसका लक्षण क्या है, यह भी हमें समझना चाहिए।

जो व्यक्ति अधिकतम प्रसन्न रहता है, संतुष्ट रहता है, गंभीर रहता है, स्वतंत्र रहता है, किसी भी प्रकार का भय, चिंता या आशंका उसको नहीं रहती, उसके मन में द्वेष, वितर्क, संशय उत्पन्न नहीं होते हैं, रजोगुण, तमोगुण की प्रवृत्ति मन में उत्पन्न नहीं होती है, सहनशक्ति, धैर्य, सरलता, विनम्रता और सेवाभाव उसके मन में बना रहता है, सत्य को, धर्म को, आदर्श को, न्याय को शक्ति शिरोधार्य करके चलता रहता है, मन में ईश्वर के प्रति प्रेम बना रहता है, कठिनाइयां, बाधाएं उपस्थित होने पर भी वह उन आदर्शों और धार्मिक कार्यों को छोड़ता नहीं है, ऐसा व्यक्ति ही उन्नति करता है और वही सफल कहलाता है।

लक्ष्य के प्रति अग्रसर होना, आगे बढ़ते रहना, लक्ष्य की प्राप्ति की गति तीव्र करना, बाधाओं से बचना और समस्याओं का समाधान करना, एक सीमा तक व्यक्ति के अपने हाथ में है।

पहले व्यक्ति के जीवन का लक्ष्य का निर्धारण हो जाता है कि ये मेरा लक्ष्य है। वह उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सर्वात्मना समर्पित होकर के चलता है तो सांसारिक प्रतिकूलताएं, सांसारिक बाधाएं, सांसारिक विरोध, सांसारिक कठिनाइयां उसके सामने कुछ भी नहीं होती हैं। वह पूर्ण आत्मविश्वास के साथ ईश्वर से शक्ति, ज्ञान बल और आनंद को प्राप्त करते हुए आगे बढ़ता है, वह भी बिना भय, संशय, शंका, लज्जा उत्पन्न किये हुए।

अनेक बार देखने में आता है कि व्यक्ति दिन में इतना असावधान होता है, इतना तमोगुण, रजोगुण से युक्त रहता है, उसमें इतनी अधिक सकामता और स्वार्थ की वृत्ति रहती है, इतनी इन्द्रियों के विषयों में आसक्ति होती है, उसके व्यवहारों में, विचारों में इतनी जड़ता रहती है कि ऐसे व्यक्ति को धार्मिक, परोपकारी, ईश्वरभक्त, आध्यात्मिक और योग मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति नहीं मान सकते।

आध्यात्मिक मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति लौकिक वृत्तियों (व्यवहारों) से अत्यंत विलक्षण (अलग तरह का) होता है। लौकिक व्यक्ति बाह्य चिन्हों के माध्यम से, बाह्य लक्षणों से, बाह्य क्रियाकलापों से कितना ही अपने आप को धार्मिक, आध्यात्मिक प्रकट करने का प्रयास करे, अन्दर से तो वो होता लौकिक ही है। सामान्य रूप से व्यक्ति के व्यक्तित्व का, उसमें मौजूद आध्यात्मिकता का पता नहीं चलता है। हां, जो व्यक्ति उसके निकट में रह रहा है, उसके हाव-भाव को, उसके विचारों को और क्रियाओं को ठीक प्रकार से सुनकर के, समझकर के, जानकर के कुछ थोड़ा पता लगा सकता है अन्यथा व्यक्ति की आध्यात्मिकता का, निष्कामता का, ऐषणारहित मनोस्थिति का, उसकी विवेकयुक्त स्थिति का या लौकिक प्रयोजन से रहित मन:स्थिति का सामान्य व्यक्ति को ज्ञान नहीं हो सकता। वह इसको पता लगा ही नहीं सकता। इतना होने पर भी यह निश्चित है कि दूसरे व्यक्ति हमारा निर्धारण करें या नहीं करें, किन्तु हम अपना निर्धारण ज़रूर कर सकते हैं कि हमारी क्या स्थिति है, हम किस दिशा में बढ़ रहे हैं।

बचपन में पूर्व जन्म के संस्कार

छोटे बच्चों की आदतों व हरकतों से उनके पिछले जन्म के संस्कारों का ज्ञान होता है।

कई बार देखा गया है कि छोटे बच्चे कहीं-कहीं कीड़े मकौड़ों को मारने में बहुत खुश होते हैं। कोई-कोई बच्चा छोटे पिल्ले व कुतिया को पकड़कर उनके गले में रस्सी डाल उन्हें खींचते-घसीटते रहते हैं। और कहीं-कहीं उन्हें घर के अंदर भी बंद कर देते हैं और दो-दो दिन तक उन्हें बाहर नहीं निकालते। जब दरवाज़ा खोलते है। तो वे अक्सर मरे हुए पाये जाते हैं। वे बच्चे खूब खुश होते हैं। इस तरह की उनकी हरकतें उनके पूर्व जन्म के संस्कारों को स्पष्ट करती हैं। पूर्वजन्म में वे निर्बलों को सताते थे। उन पर जुल्म करते थे। अब इस जन्म में उसका फल भोगेते हैं। दमा जैसी नामुराद बीमारी का शिकार बनते हैं। कामी, दुराचारी बनकर अपयश और सजा पाते हैं।

–वीतराग महात्मा प्रभुआश्रित जी महाराज

www.thearyasamaj.org

गीता ज्ञान : जीवन का महत्व

–डॉ. महेश विद्यालंकार

मानव जन्म परमात्मा की अमूल्य देन है। दुनिया में इससे बढ़कर और कोई वस्तु नहीं है। नर-तन बड़े सौभाग्य और पुण्य कर्मों के फल से मिलता है। इसीलिए संसार के सभी पदार्थों से जीवन कीमती है। जगत के अन्य जीव-जन्तुओं, पशु-पक्षियों आदि की तुलना में मनुष्य सबसे श्रेष्ठतम प्राणी है। परमात्मा ने यह सारी सृष्टि मानव के लिए बनाई है। प्रभु-रचना का सुन्दरतम और श्रेष्ठतम नमूना मानव है। इस मानव-जीवन की जितनी महिमा बताई जाये और गुणगान किया जाये, उतना थोड़ा है। अनेक योनियों तथा जन्मों को पार कर, नरतन पाने का अवसर मिलता है। कहते हैं कि चौरासी लाख योनियों में मानव-योनि सबसे ऊंची पदवी है। इस शरीर को देवों की नगरी व प्रभु का वरदान माना गया है।

यह जीवन बड़ा अमूल्य है। इसका एक-एक श्वास करोड़ों का है। इस श्वास के निकल जाने के बाद इसका मूल्य पता चलता है। एक बार यह जीवन हाथ से निकल गया तो समझो अनेक जन्मों तथा युगों के घेरे में पड़ गये। जीवन इतना सस्ता नहीं है, जितना हम इसे समझते हैं। यह एक सुनहरा मौका मिला है। यदि इस मानव जीवन को न संभाला, इसकी कीमत न जानी, इसे अपने उद्देश्य की ओर न ले गये, तो उपनिषद के शब्दों में 'महती विनष्टिः' इससे बढ़कर और विनाश कुछ न होगा। मानव जन्म बार-बार नहीं मिलता है। मानव-जीवन तो जन्म-मृत्यु के चक्र से छूटने का साधन है। मनुष्य-देह में ही व्यक्ति अपने स्वरूप को जानकर प्यारे प्रभु तक पहुंच सकता है। परमेश्वर को जानने तथा पाने का और कोई रास्ता नहीं है। इसीलिए यह जीवन अमूल्य और महत्वपूर्ण है। इसका सदुपयोग करना चाहिए।

जीना एक कला है। सबको जीना नहीं आता है। जीने के लिए विचारों की ज़रूरत होती है। जीवन जब खत्म हो जाता है तब लोगों को जीना आता है। गुज़रा हुआ समय दुबारा वापस नहीं आता। आम आदमी रोता हुआ पैदा होता है और शिकवे, शिकायत, चिन्ताओं, समस्याओं व इच्छाओं की भागदौड़ में जीता है तथा अन्त में पछताता और रोता हुआ दुनिया से विदा हो जाता है।

जिस उद्देश्य के लिए जीवन मिला था, वह भूल गया। पशुओं के समान खाना, सोना, विषय- वासनाओं आदि में ही उम्र गुज़ार दी। जो अपने को संभालने, ऊपर उठाने और अच्छे कर्म करने का मौका मिला, उसे गवां दिया। बुद्धिमान एवं समझदार व्यक्ति वही होता है जो समय, साधन और शक्ति के रहते अपने को संभाल लेता है। वह जीवन को बुरी संगति, दोषों तथा बुराइयों से हटाकर अच्छे रास्ते पर चल पड़ता है।

गीता सम्पूर्ण जीवन की व्याख्या है। जीवन को कैसे जीना है, जीवन का क्या ध्येय है, यही गीता बताती है। यह जीवन कुरुक्षेत्र है। इसमें नित्य लड़ाइयों, चिन्ताओं, अच्छाओं, वासनाओं आदि के संघर्ष छिड़े रहते हैं। कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जो संघर्ष, समस्याओं, चिन्ताओं और इच्छाओं की उलझन में न उलझा हुआ हो। स्त्री-पुरुष, बूढ़े-बच्चे सभी लड़ाई के मैदान में हैं। कोई पाने के लिए संघर्ष कर रहा है तो कोई छोड़ने के लिए परेशान है। कोई भूख से परेशान है तो कोई भूख न लगने से बीमार व बेचैन है। सभी के जीवन में संघर्ष है।

जीवन संग्राम है। इस संग्राम में कैसे विजयी हुआ जाये, यही जीवन-कला गीता हमें सिखाती है। गीता जीवन के हर क्षेत्र और पहलू की समस्या का व्यावहारिक, उपयोगी एवं सीधा-सच्चा मार्ग बताती है। गीता का सन्देश है कि जीवन की समस्याओं, चिन्ताओं एवं उलझनों से भागना नहीं है प्रत्युत जागना है। ज्ञान और धैर्यपूर्वक समस्याओं का समाधान खोजना है। समस्या है तो उसका समाधान भी है। संसार में रहते हुए भागते-दौड़ते, उलझनों और चिन्ताओं भरे जीवन को जीते हुए अपने जीवन के उद्देश्य को पाना है। धीरे-धीरे उस ओर बढ़ना है। ऐसा ही कर्मशील व्यक्ति जीवन-संग्राम में विजयी होता है। भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन को ज्ञानपूर्वक जीना सिखाया था। इसलिए अर्जुन जीवन संग्राम में सफल हुए। जीवन युद्ध है। अन्दर-बाहर दोनों जगह युद्ध हो रहा है। इसे जीतना है। कैसे जीतना है, यह गीता बताती और सिखाती है। यही गीता का जीवन-दर्शन है। जिसने इसे समझ लिया, वह भवसागर से पार हो गया। भवसागर से पार होना ही मानव-जीवन की सार्थकता और उपयोगिता है।

श्रावणी पर्व वेद प्रचार समारोह

आर्य समाज सैक्टर-7, रोहिणी में दिनांक 29 अगस्त से 1 सितम्बर 2013 तक आर्य विद्वान डॉ. शिव कुमार शास्त्री एवं भजनोपदेशक श्री श्यामवी राघव जी द्वारा वेद प्रचार समारोह हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया।

❑❑❑

आर्य समाज प्रशान्त विहार में दिनांक 5 अगस्त से 11 अगस्त 2013 तक वैदिक विद्वान स्वामी शिवानन्द जी मथुरा वाले द्वारा वेद प्रचार समारोह हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया।

www.thearyasamaj.org

प्रो. (डॉ.) सुन्दरलाल कथूरिया की 'अद्यतन हिन्दी-कविता' नये संदर्भ' लोकार्पित

अखिल विश्व गायत्री परिवार, शांतिकुंज, हरिद्वार के तत्त्वाधान में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा (पश्चिमी दिल्ली) की ओर से आर्य समाज, जनकपुरी के विशाल सभागार में लोकार्पण, संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह का भव्य आयोजन किया गया। लेखक और प्रकाशक बधाई के पात्र हैं तथा यह ग्रंथ 'काव्य-प्रेमियों' एवं समीक्षकों के लिए बहुत उपयोगी है। डॉ. कथूरिया एवं अन्य विद्वानों को भी इस अवसर पर शाल, पुष्पगुच्छ, ग्रंथादि भेंटकर सम्मानित किया गया। सभारोह में बहुत बड़ी संख्या में प्राचार्य, अध्यापक छात्र, साहित्यकार एवं पत्रकार उपस्थित थे। संयोजक श्री के.एल. सचदेवा ने सभी का धन्यवाद किया।

श्रावणी पर्व व वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्य समाज प्रशान्त विहार में श्रावणी पर्व व वेद प्रचार सप्ताह सोमवार 5 अगस्त से रविवार 11 अगस्त 2013 तक धूमधाम से मनाया गया। समापन समारोह में कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री सुनील गुप्ता, मुख्य विधि सताहकार व प्रवक्ता (तिहाड़ जेल) व मधुर भजन प. प्रताप आर्य व वेद प्रवचन-वैदिक विद्वान स्वामी शिवानन्द जी (मथुरा वाले) व कृष्ण चन्द आहुजा (प्रधान), मनोहर लाल चुग (मन्त्री) व महेन्द्र पाल अरोड़ा (कोषाध्यक्ष) ने अपने विचार रखे।

प्रवचन व शंका समाधान

आर्य समाज, संदेश विहार, पीतमपुरा दिल्ली में पूज्य स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक जी के द्वारा सांख्य दर्शन पर प्रवचन व शंका समाधान का कार्यक्रम दिनांक 12.08.2013 से दिनांक 15.08.2013 मनाया गया। दिनांक 15.08.2013 को श्री शशि भूषण मल्होत्रा (प्रधान), श्री दुर्गेश आर्य (मन्त्री) व श्री जसवन्त सिंह कपूर ने सभा में अपने विचार प्रस्तुत किए।

चुनाव सम्पन्न

दिनांक 04 अगस्त 2013 को आर्य समाज सरस्वती विहार, दिल्ली-34 में चुनाव अधिकारी श्री कृष्ण देवजी आर्य के निर्देशानुसार सर्वसम्मति से निम्नलिखित अधिकारी चुने गए। **प्रधान**-श्री नन्द किशोर गुप्ता जी, **कार्यकारी प्रधान**-श्री ओमप्रकाश मनचन्दा जी, **मन्त्री**-श्री अरूण आर्य जी, **कोषाध्यक्ष**- श्री नितिन दुआ जी।

❑❑❑

दिनांक 21.07.2013 को आर्य समाज सैक्टर-7, रोहिणी के भव्य सभागार में सभी सदस्यों के मध्य चुनाव-अधिकारी व संरक्षक श्री सुखदेव आर्य तपस्वी जी के नेतृत्व में आर्य समाज के नये पदाधिकारियों का चुनाव हुआ, जिसमें सर्वसम्मति से **प्रधान**-श्री शिवकुमार गुप्ता, **मन्त्री**-श्री राजीव आर्य जी, **कोषाध्यक्ष**-श्री देवराज आर्य जी निर्वाचित हुए।

वेद पाठ का कार्यक्रम सम्पन्न

आर्य समाज विशाखा एन्क्लेव, पी.यू. ब्लॉक, उत्तरी पीतमपुरा, दिल्ली में दिनांक 24.08.2013 को वेद पाठ का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन स्त्री आर्य समाज के द्वारा किया गया जिसमें प्रधाना-दयावन्ती सचदेवा व निर्मल गवा मंत्रिणी व रणसिंह राणा (प्रधाना) व ओम प्रकाश गुप्ता (मन्त्री)) व सूर्य प्रकाश (कोषाध्यक्ष) ने सभा को सम्बोधित किया एवं दिनांक 28.08.2013 को श्री कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव मनाया गया जिसमें भजन व प्रवचन श्री नरेन्द्र कुमार 'सुमन' के द्वारा किया गया जिसका आर्य जनता ने आनन्द उठाया।

❑❑❑

स्त्री आर्य समाज विशाखा एन्क्लेव पी.यू. ब्लॉक, उत्तरी पीतमपुरा, दिल्ली-34 के तत्वावधान में वेदपाठ का आयोजन दिनांक 24 अगस्त 2013, शनिवार को प्रातः 9.00 बजे से मध्यान्ह 1.30 बजे तक सम्पन्न हुई। **-ओमप्रकाश गुप्ता,मंत्री**

स्वतन्त्रता दिवस समारोह

आर्य समाज सरस्वती विहार में दिनांक 15.08.2013 को स्वतन्त्रता दिवस समारोह पर भव्य कार्यक्रय का आयोजन किया गया जिसमें प्रधान श्री नन्द किशोर जी मन्त्री, श्री अरूण आर्य जी व कार्यकारी प्रधान-श्री ओम प्रकाश आर्य जी ने अपने विचार रखे व झण्डे को फहराया गया एवं इस मौके पर कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें मनीषी जी ने वीर रस से पूर्ण कविता पाठ का आयोजन किया गया।

श्री कृष्णजन्माष्टमी महोत्सव

आर्य समाज विशाखा एन्कलेव की ओर से दिनांक 28 अगस्त 2013 को श्री कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर यज्ञ आचार्य श्री धूमसिंह शास्त्री जी द्वारा, भजन एवं प्रवचन श्री नरेन्द्र कुमार 'सुमन' द्वारा सम्पन्न हुआ एवं कार्यक्रम की समाप्ति पर ऋषिलंगर का आयोजन हुआ।

www.thearyasamaj.org
RNI No.DEL BIL/2008/25452 Total Pages 12 ओ३म् Posting Date 5 or 6 September 2013 DL (N)0225/2012-14

प्रेषक Date of Publication: 25 August 2013

कमल ज्योति

सितम्बर 2013 (मासिक) एक प्रति का मूल्य 10 रुपये
डी-796, सरस्वती विहार, दिल्ली-110034,
फोन : 27017780

सेवा में

जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

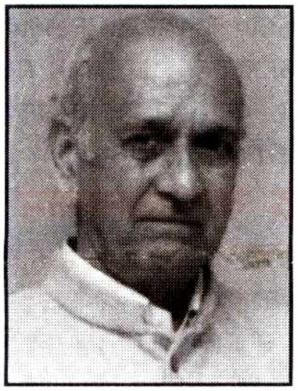

भारतीय संस्कृति के प्रति आस्थावान् एवं सद्ग्रंथों के अध्ययन में तत्पर श्री ओम प्रकाश ठाकुर एक प्रतिभाशाली विद्वान हैं। संस्कृत जगत् में श्रेष्ठ अध्यापक एवं सुकवि के रूप में इन्हें ख्याति प्राप्त है। पश्चिमी पाकिस्तान के अलीपुर ग्राम में 20 सितम्बर 1933 को आपका जन्म हुआ। विभाजन के पश्चात् आपने शास्त्री (प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान) एम.ए. तथा साहित्याचार्य परीक्षाएं उत्तीर्ण की। दिल्ली में 40 वर्ष शिक्षण कार्य करने के पश्चात् वर्ष 1994 में सेवा निवृत हुए। दिल्ली संस्कृत अकादमी ने संस्कृत साहित्य सेवा सम्मान से इन्हें पुरस्कृत किया। श्री ठाकुर मधुर भाषी एवं सेवा परायण व्यक्ति है। 20 सितम्बर 2013 को इनके जन्म दिवस पर 'कमल ज्योति' परिवार की ओर से मैं इन्हें हार्दिक बधाई एवं शुभ कामनाएं प्रदान करता हूँ परम पिता परमात्मा आपको उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायु प्रदान करें। **-अतुल आर्य**

वैदिक बालचित्र एवं निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन

आर्य समाज प्रशांत विहार के तत्वाधान में स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर बाल विभाग की ओर से, वैदिक बालचित्र एवम् लिखित निबन्ध प्रतियोगिता रविवार दिनांक 18.08.2013 को सम्पन्न हुई।

महान् कर्मयोगी, धर्म निष्ठ, सर्वप्रिय, परोपकारी, सहृदय, यशस्वी, 'कमल ज्योति' के तन, मन, धन से सहयोगी श्री चन्द्र भान जी चौधरी 21 सितम्बर 2013 को अपने जीवन के 88 वर्ष पूरे कर रहे हैं। आपका व्यक्तित्व भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्त्रोत हैं।

21 सितम्बर को आपके 89वें जन्म दिवस के शुभावसर पर मैं ''कमल ज्योति'' परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं प्रदान करता हूँ। परम पिता परमात्मा आपको उत्तम स्वास्थ्य के साथ दीर्घायु प्रदान करें।

-माता कमला आर्य स्मारक ट्रस्ट

पाठकों से निवेदन

यदि आपका 'कमल ज्योति' हेतु शुल्क अभी तक जमा नहीं हुआ है या समाप्त हो गया है तो कृपया अपना शुल्क द्विवार्षिक 200/- और आजीवन 1100/- रुपये की दर से 'कमल ज्योति' के नाम मनिआर्डर/क्रास चैक से कार्यालय, डी-796, सरस्वती विहार, दिल्ली-110034 के पते पर शीघ्र भेजें ताकि पत्रिका आपको लगातार मिलती रहे। अपना नाम, निवास का पूरा पता, कोड नम्बर, फ़ोन तथा मोबाईल नम्बर आदि सुन्दर व साफ़ शब्दों में लिखने का कष्ट करें। धन्यवाद!

-प्रबन्धक

स्वामी-माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट (रजि.) के लिए मुद्रक, प्रकाशक तथा सम्पादक एल.आर. आहूजा, चलभाष : 9810454677 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करौलबाग, नई दिल्ली-5, दूरभाष : 41548504 मो. 9810580474 से मुद्रित। **कार्यालय : डी-796, सरस्वती विहार, दिल्ली-110034 से प्रकाशित**